मेघ और तरंग

रबिन्द्रनाथ ठाकुर

चित्राँकनः सुनैना कोएलो

कथा की 300एम थिंकबुक

माँ, रहें मेघ में जो
मुझे करें इशारे वो

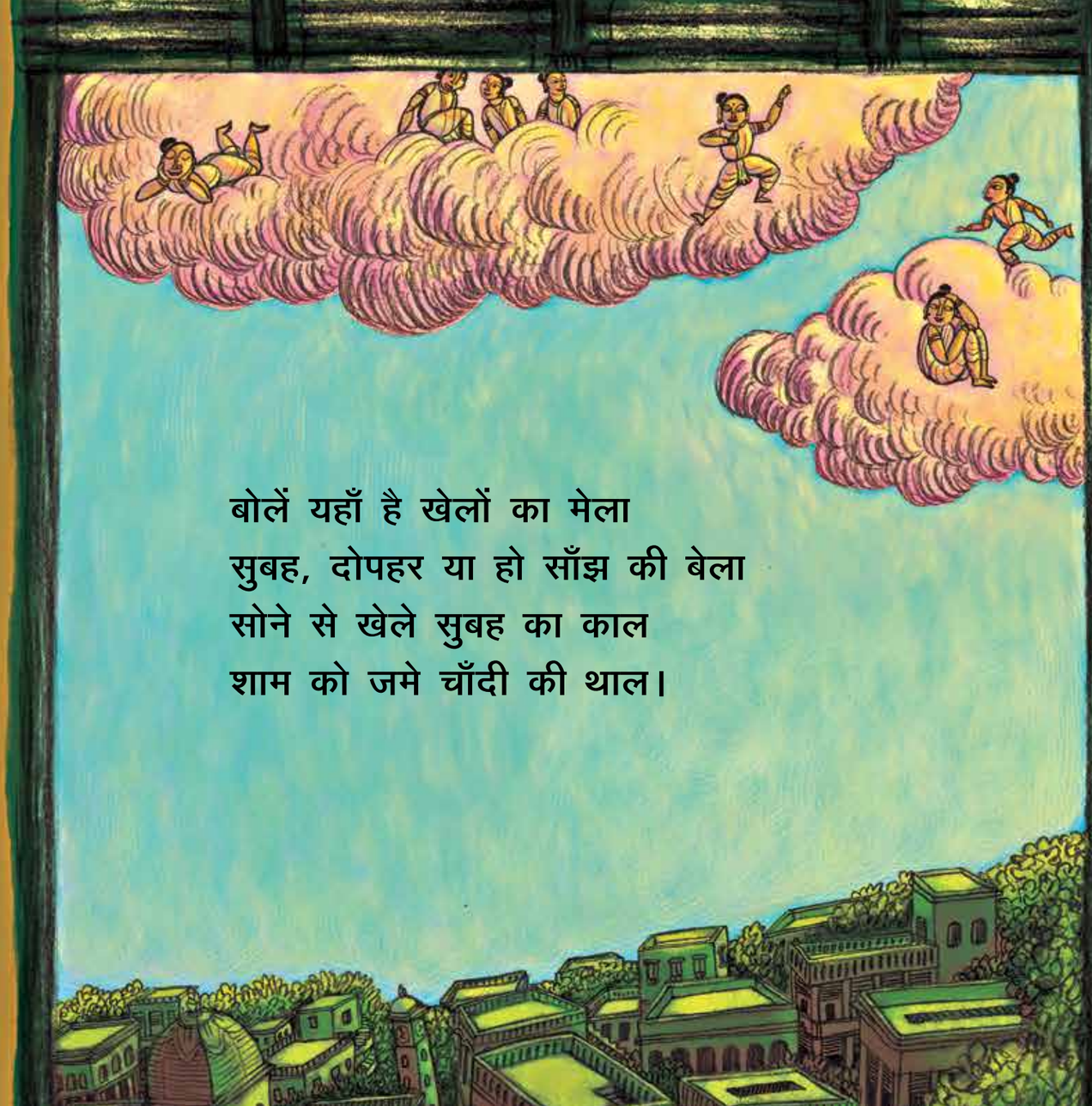

बोलें यहाँ है खेलों का मेला
सुबह, दोपहर या हो साँझ की बेला
सोने से खेले सुबह का काल
शाम को जमे चाँदी की थाल।

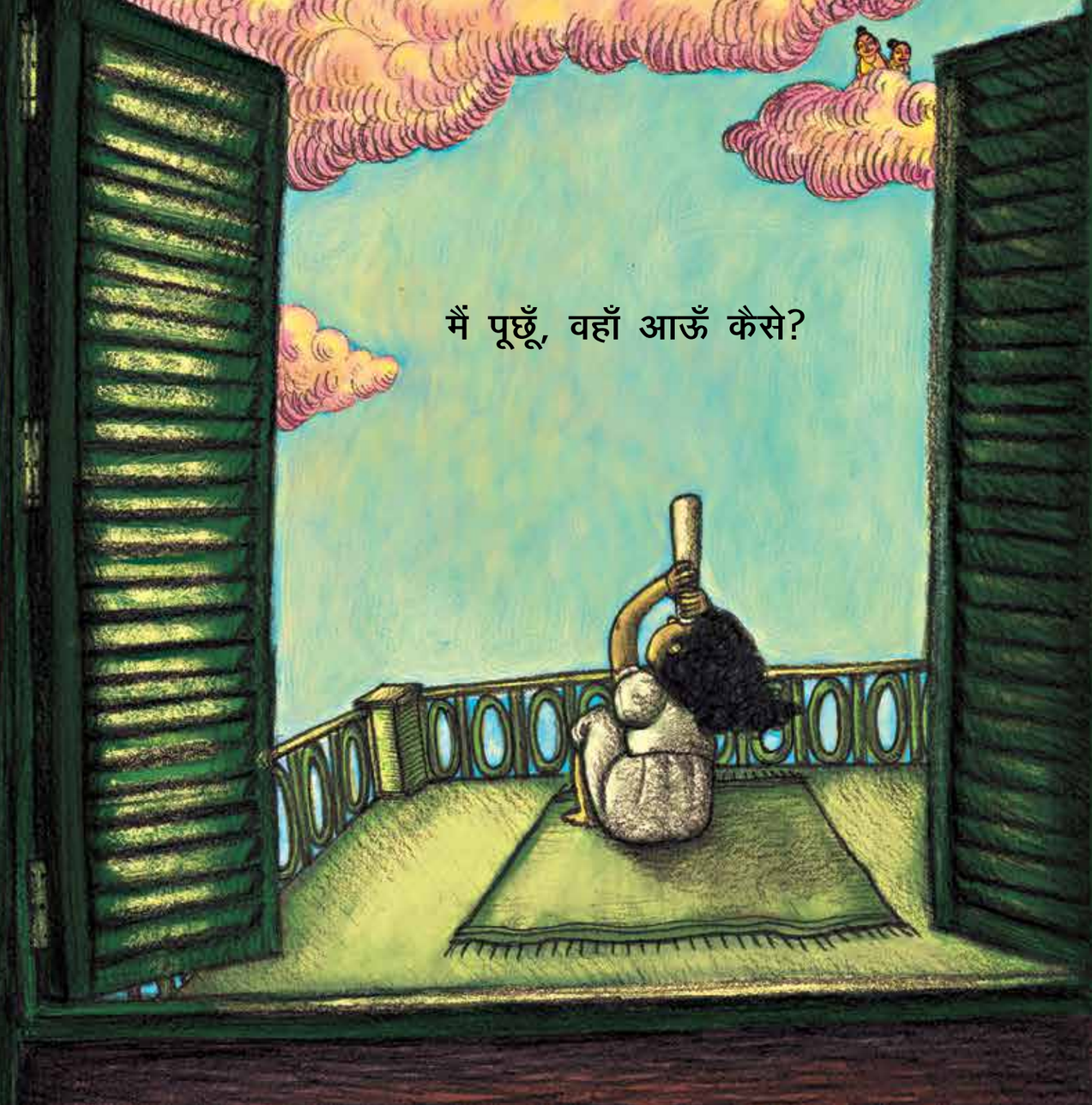

मैं पूछूँ, वहाँ आऊँ कैसे?

बोलें वे, आओ धरती के किनारे
आसमान की ओर बढ़ाओ हाथ
मिलेगा तुम्हें बादलों का साथ!

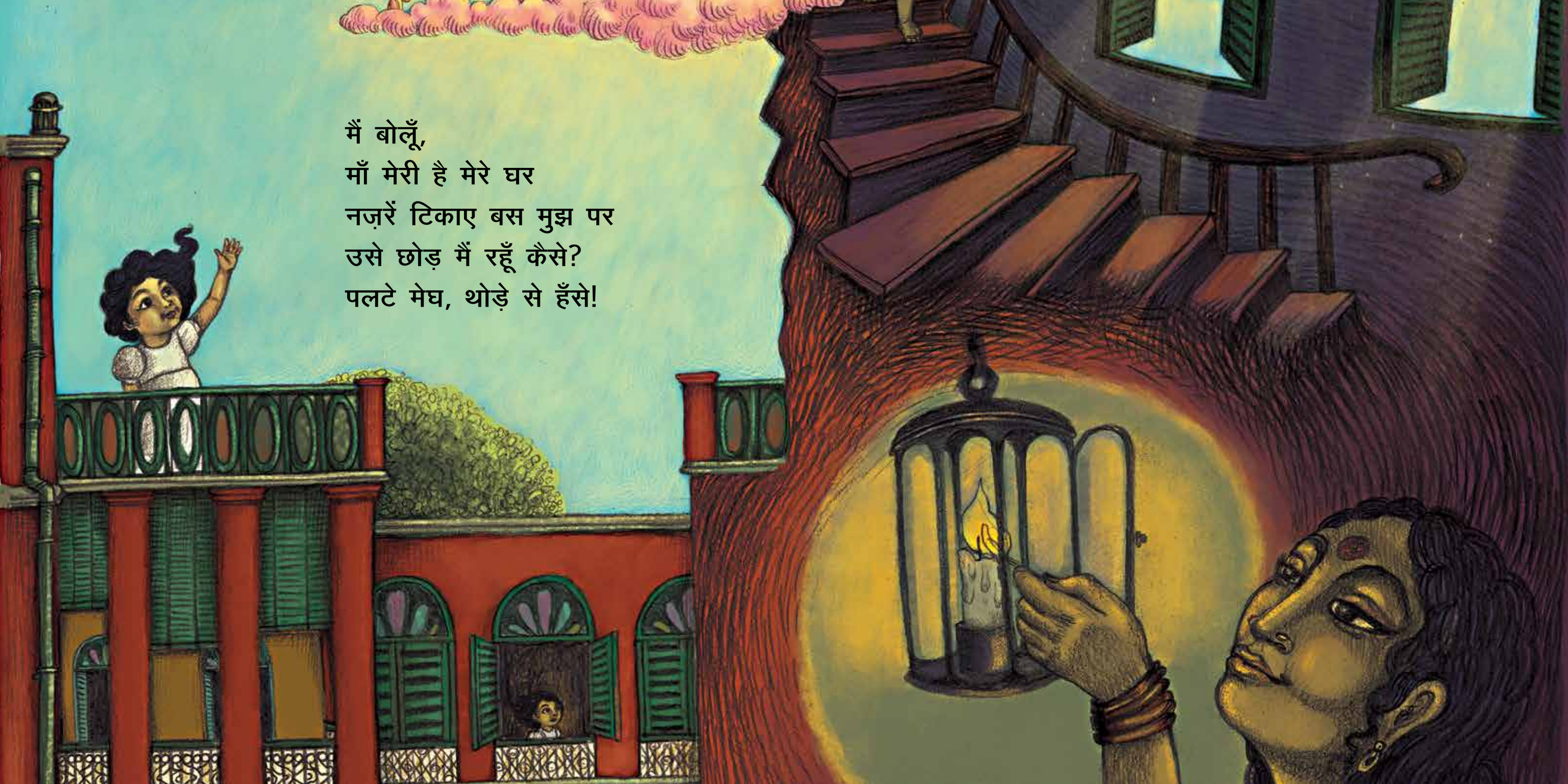
मैं बोलूँ,
माँ मेरी है मेरे घर
नज़रें टिकाए बस मुझ पर
उसे छोड़ मैं रहूँ कैसे?
पलटे मेघ, थोड़े से हँसे!

सोच माँ अगर मैं बन जाऊँ मेघ
और बने चाँद तू, ऐसा हो काश!

आसमानी छत पर खेलें हम
तेरे चेहरे पर रख लूँ मैं
अपने हाथ।

माँ, रहें तरंगों में जो
मुझे करें इशारे वो
कहें गाएँ हम कल-कल गाना
सुबह, शाम तुम जब चले आना
झूमते हुए कितने देश है जाना
कुछ पहचाना, कुछ अनजाना।

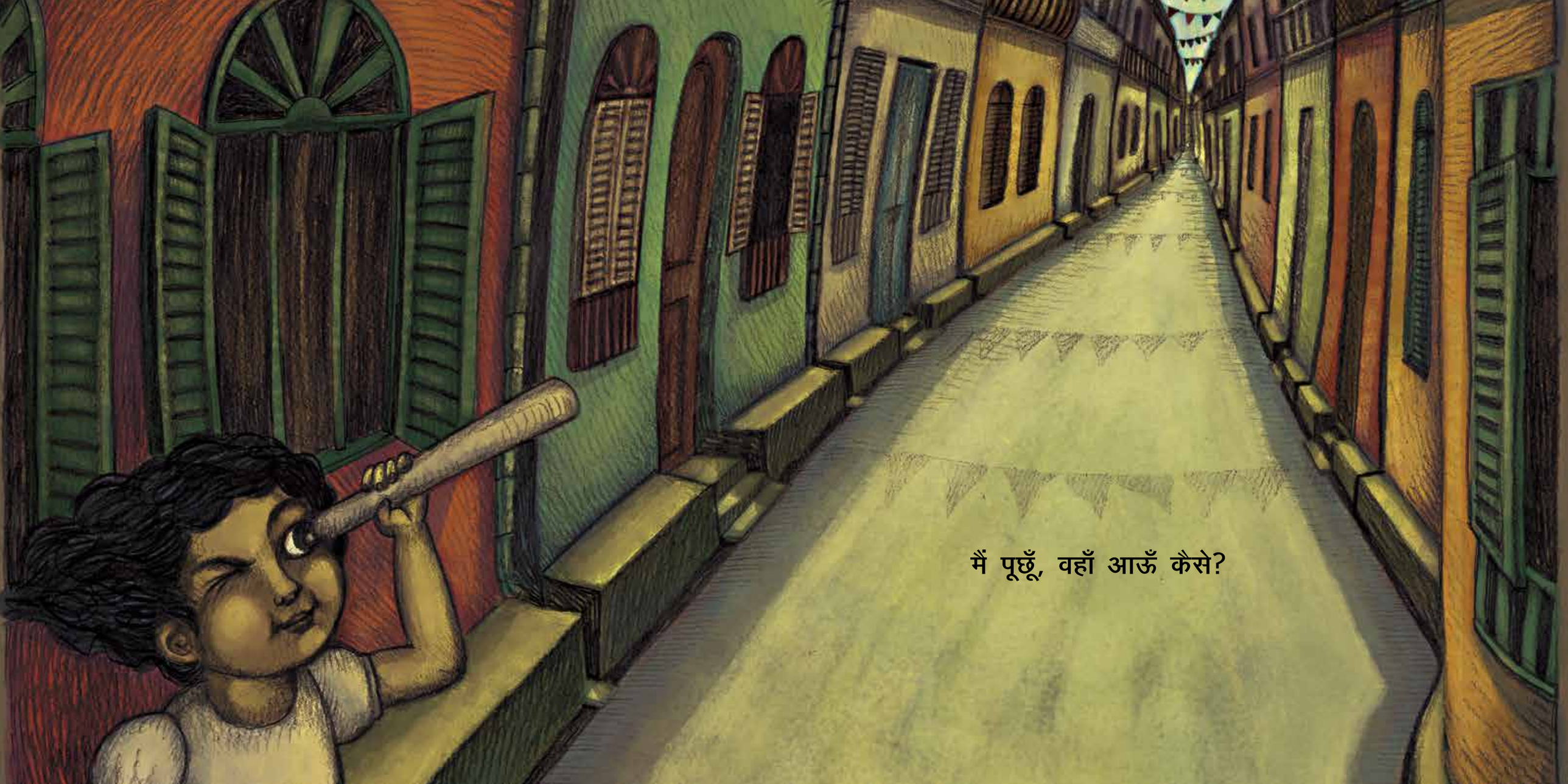

मैं पूछूँ, वहाँ आऊँ कैसे?

बोलें वे आओ घाट के किनारे
खड़े रहना कर आँखों को बंद
ले चलें हम तुम्हें तरंगों के संग!

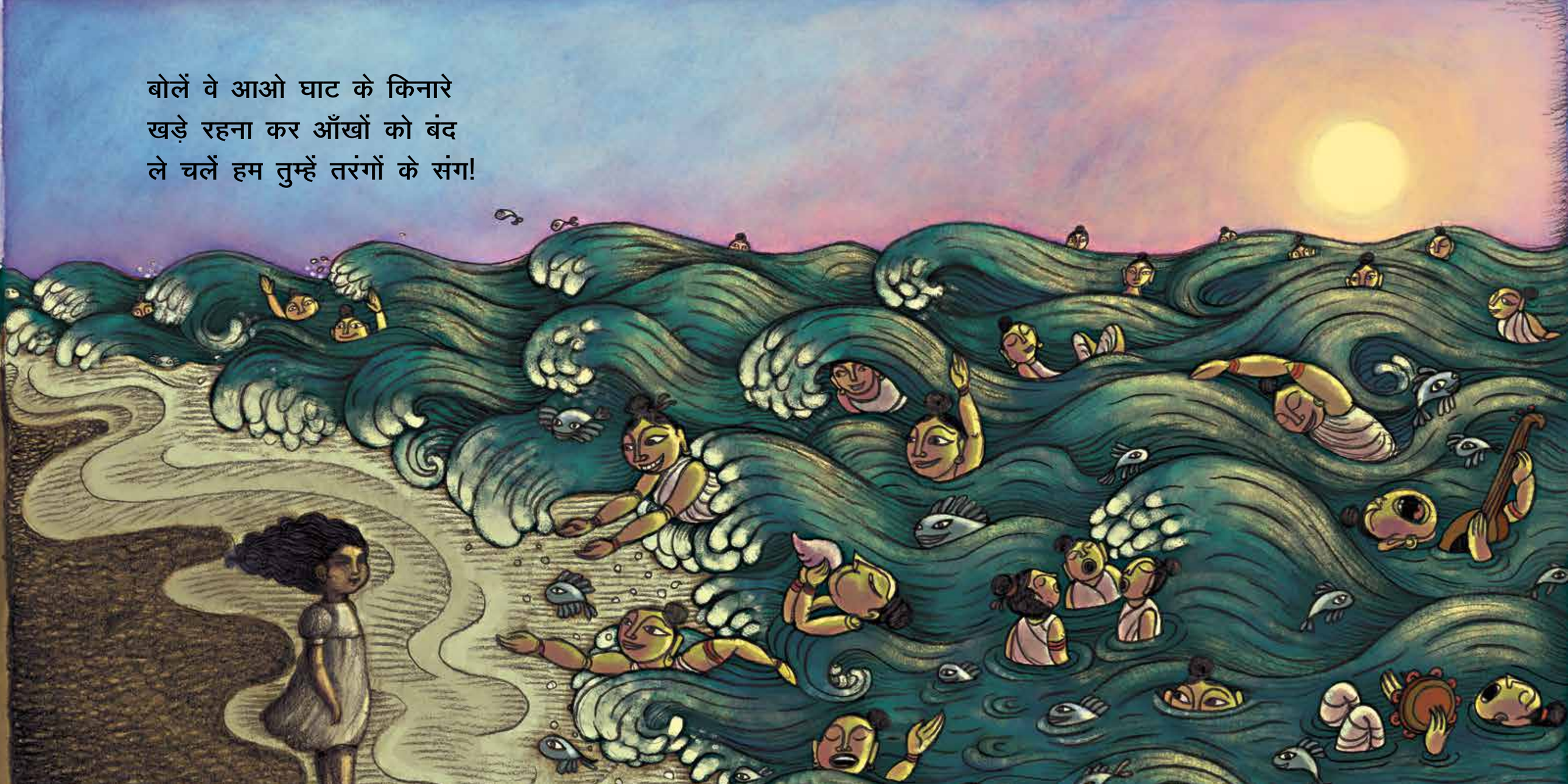

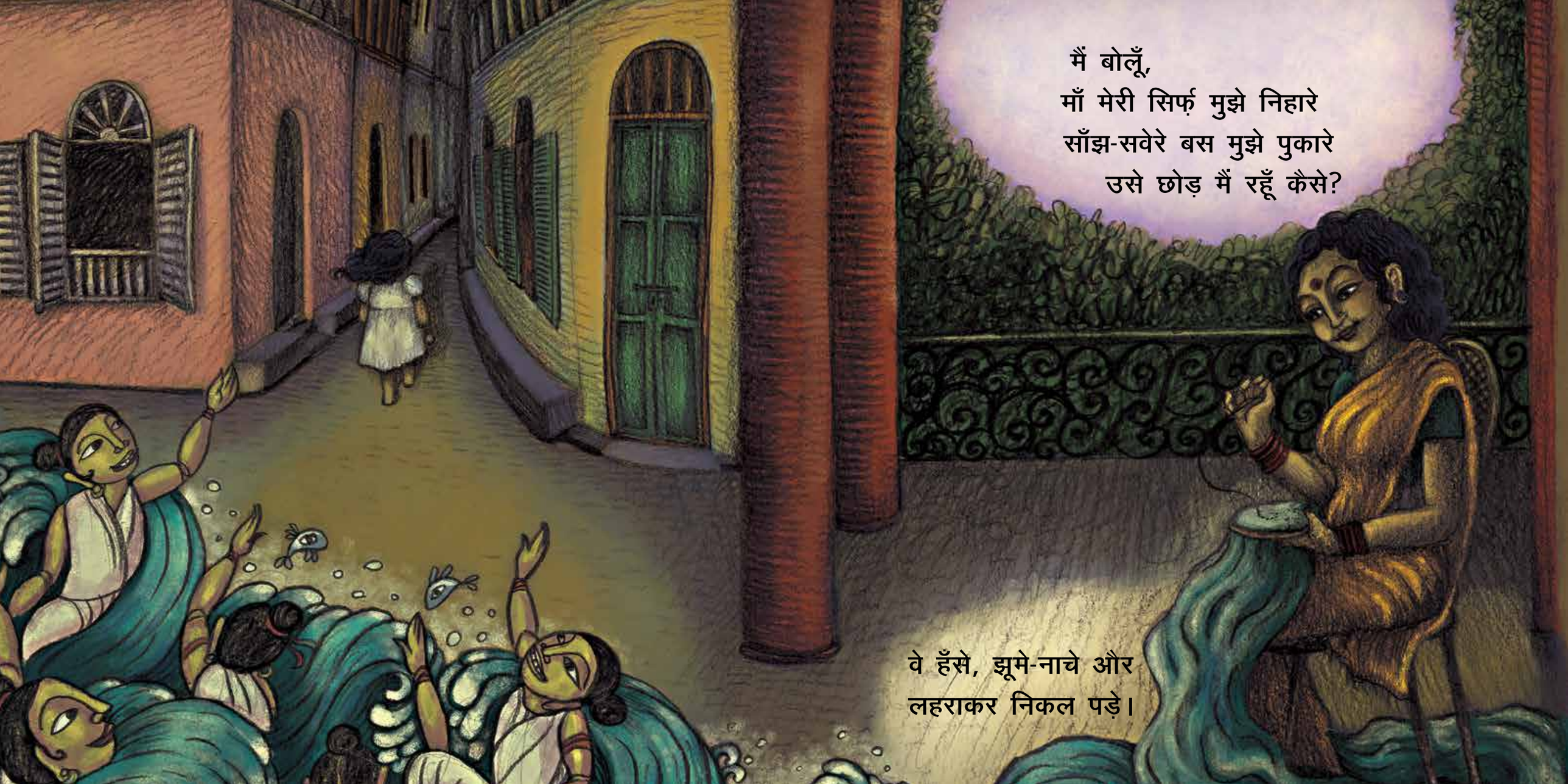
मैं बोलूँ,
माँ मेरी सिर्फ़ मुझे निहारे
साँझ-सवेरे बस मुझे पुकारे
उसे छोड़ मैं रहूँ कैसे?
वे हँसे, झूमे-नाचे और
लहराकर निकल पड़े।

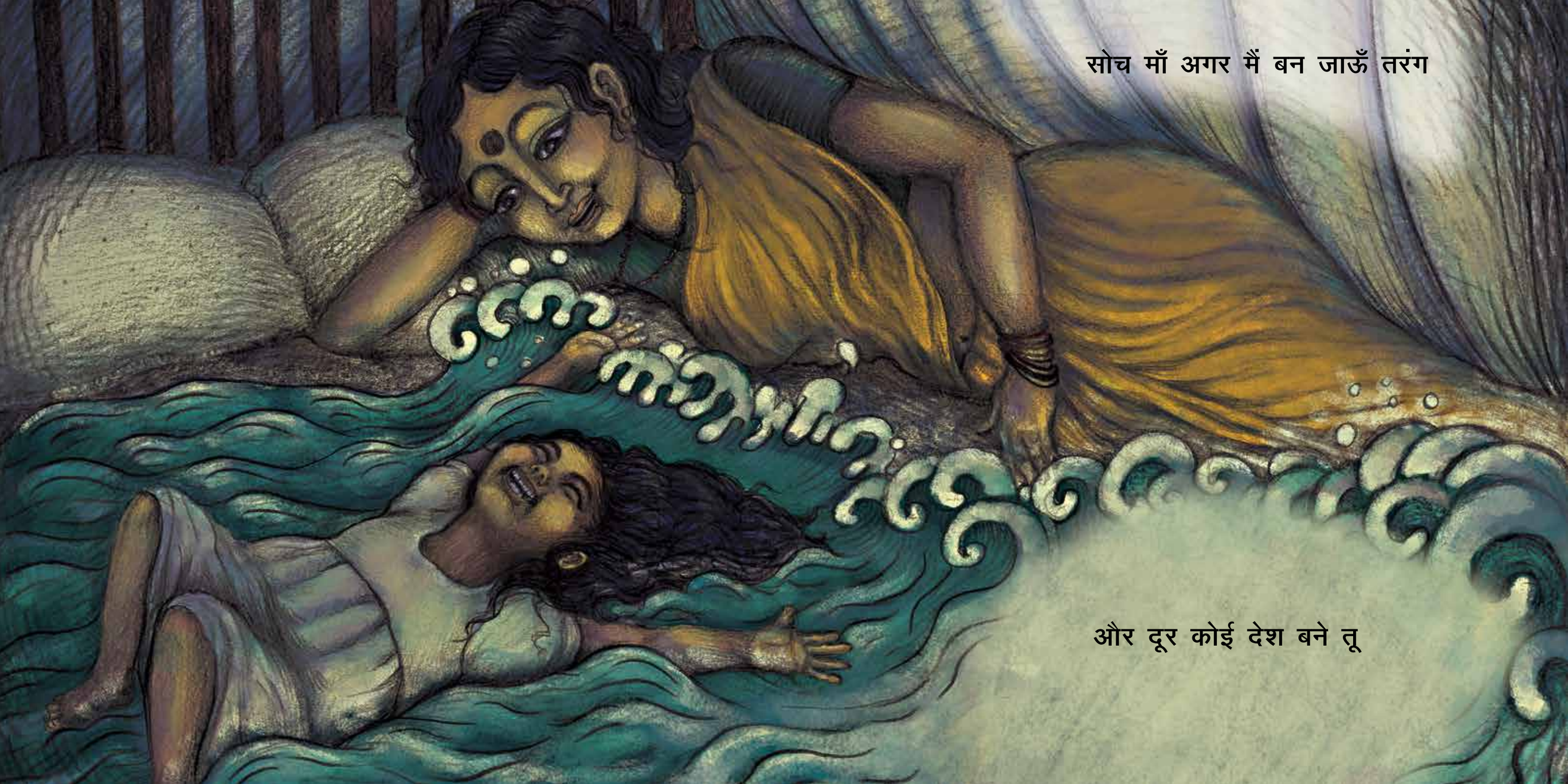
सोच माँ अगर मैं बन जाऊँ तरंग
और दूर कोई देश बने तू

उछलकर मैं पाऊँ तेरी गोद
फिर कोई न पाए हमें छू!

रबिन्द्रनाथ ठाकुर का पारिवारिक पेड़

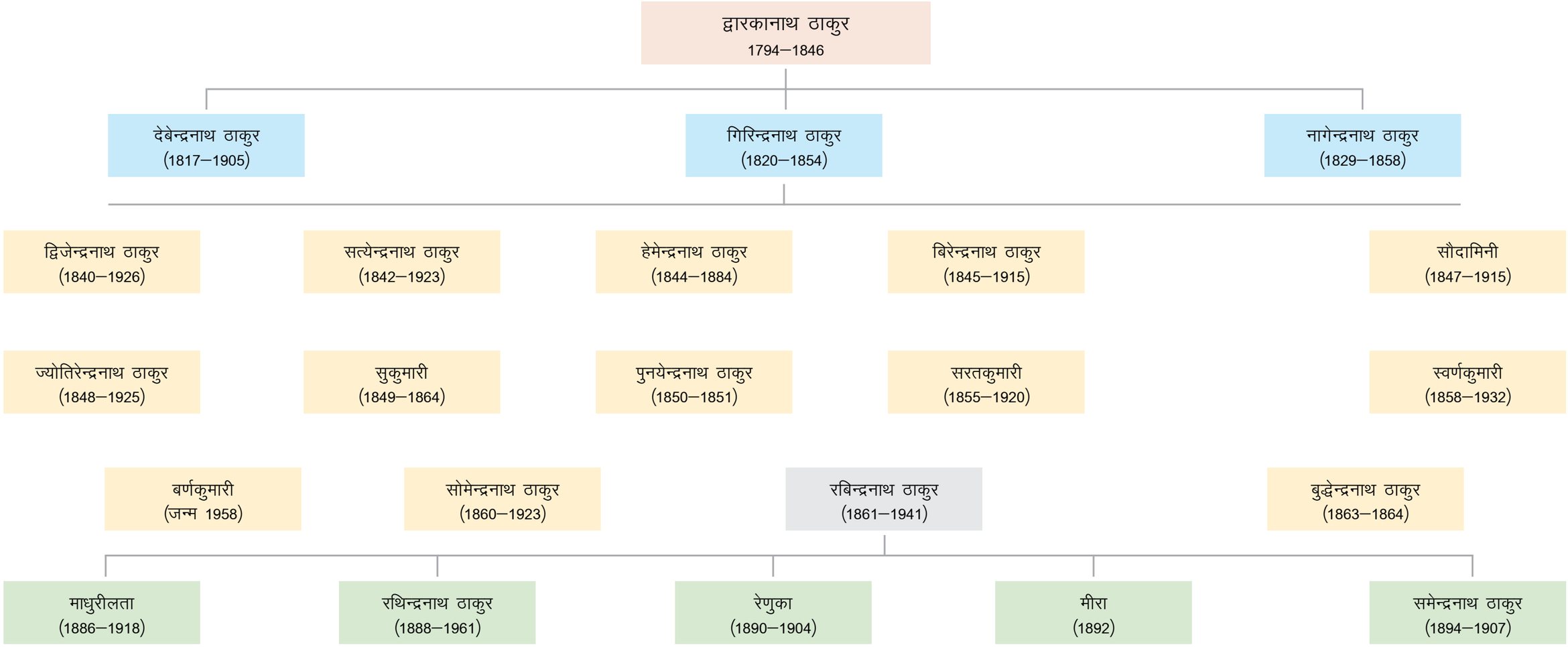

x#no jfcUnukFk Bkdj का जन्म 7 मई सन् 1861, पश्चिम बंगाल, में हुआ। उनके पिता श्री देबेन्द्रनाथ ठाकुर संस्कृत के महान विद्वान थे। गुरुदेव की प्राथमिक शिक्षा घर ही में हुई। जब सब बच्चे स्कूल जाते तो गुरुदेव अपने सपनों की छोटी–सी दुनिया में खो जाते! गुरुदेव छिप–छिपकर लिखा करते थे। अपनी पहली कविता उन्होंने आठ साल की उम्र में लिखी और सोलह साल की उम्र में उनका पहला कविता–संग्रह प्रकाशित हुआ। भारतीय साहित्य में नई जान फूँकने वाले गुरुदेव को सन् 1913 में साहित्य में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

luuk dk, yk ने राष्ट्रीय डिज़ाईन संस्थान से एनीमेशन में पढ़ाई की है। वे अब मुम्बई में रहती हैं जहाँ वे टेलिविजन के लिए एनीमेशन करती हैं। जब वे चित्रकारी नहीं कर रही होतीं, तब वे ज़्यादातर सो रही होती हैं, सपने देख रही होती हैं या फिर समुद्र किनारे बैठी होती हैं, यह सोचते हुए कि काश यह पानी साफ़ होता, तैरने लायक।

vfu#) e[kkik/;k; एक लेखक, चित्रकार, अनुवादक और फ़ोटोग्राफ़र हैं। इनकी लिखी व अनुवादित रचनाएँ कई बांग्ला पत्रिकाओं मे प्रकाशित हुई हैं। इन्हें शब्द, रंग और रेखाओं में सपने देखना व दिखाना खूब भाता है। अनिरुद्ध गुरुदेव के पक्के चेले हैं, यहाँ तक कि इनकी गुरुदेव जैसी ही लम्बी सफ़ेद दाढ़ी भी है।

nvjQkj fMtkbu की शुरुआत कुछ विशिष्ट डिज़ाइनरों – वृशाली केकरे, नितिन वीरकर, गौरी बारवे, हरिणि चंद्रशेखर और धन पटेल ने की थी। देअरफ़ोर डिज़ाइन एक बहुमखी डिज़ाइन घर है जो डिज़ाइन सम्बंधी क्षेत्रों में सहायता प्रदान करता है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2011, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © रबिन्द्रनाथ ठाकुर
चित्राँकन कृति स्वामित्व © सुनैना कोएलो
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

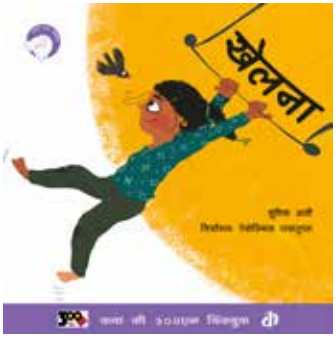

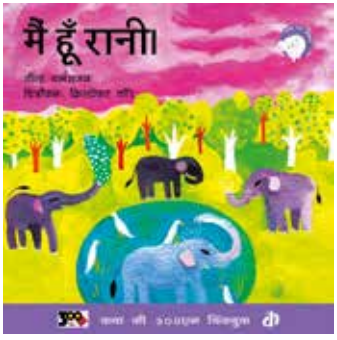

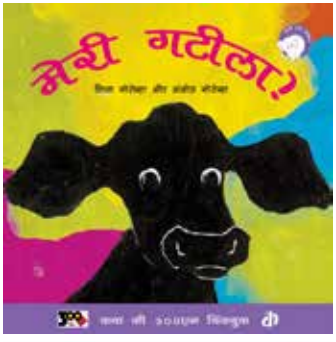

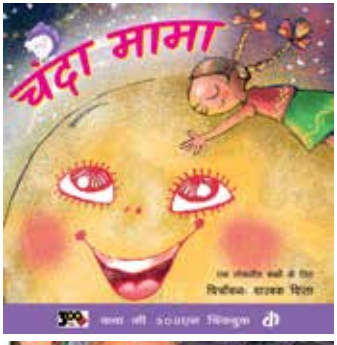

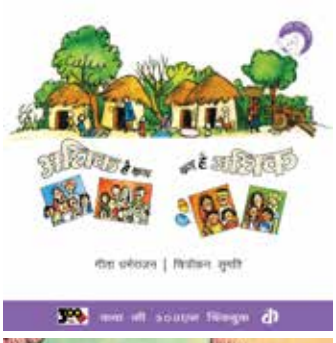

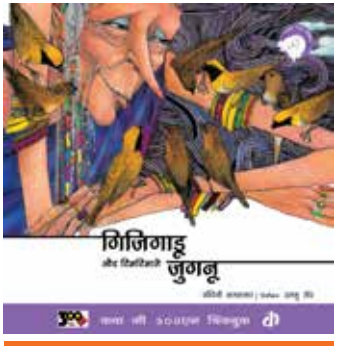

FOR OUR BOOKS

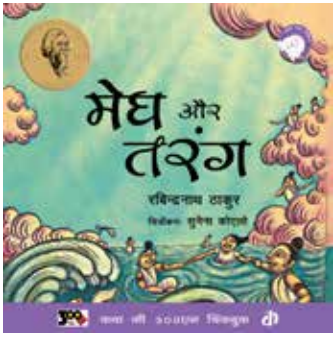

www.books.katha.org

"India's multicultural identity through the stories."

— The Pioneer

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx

इसकी इंडियो श्रृंखला में